



## अभिप्रेरणा: वर्तमान समय में आवश्यकता एक विवेचन

डॉ. सुभाष यादव

शोधार्थी, मनोविज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

**Abstract:** अभिप्रेरणा का मानव जीवन में अत्यधिक महत्त्व है। अभिप्रेरणा ही व्यक्ति को आन्तरिक रूप से उत्तेजित करके उसे जीवन में नवीन आयामों को छूने की ओर अग्रसर करती है। जीवन में सकारात्मक ऊर्जा को बनाए रखने के लिए व्यक्ति को अभिप्रेरित रहना आवश्यक है। अभिप्रेरणा के अभाव में व्यक्ति के जीवन में नकारात्मकता हावी हो जाती है तथा जीवन निरशामयी हो जाता है। एक अभिप्रेरित व्यक्ति का जीवन के प्रति सकारात्मक नजरिया रहता है तथा वह जीवन को आनन्द एवं उल्लास के साथ जीने में सफल हो जाता है।

**Keywords:** अभिप्रेरणा, अभिप्रेरणात्मक चक्र, अभिप्रेरक, मूल प्रवृत्ति, अभिप्रेरणा के सिद्धान्त, अधिगम में अभिप्रेरणा की भूमिका।

### अभिप्रेरणा का अर्थ एवं स्वरूप:-

अभिप्रेरणा व्यक्ति की एक आन्तरिक अवस्था है जो उसमें क्रियाएँ उत्पन्न करके उसके व्यवहारों को एक खास दिशा में उद्देश्य प्राप्ति की ओर अग्रसर करती है। अंग्रेजी भाषा में अभिप्रेरणा को 'Motivation' कहा जाता है जो लैटिन शब्द 'Movere' से बना है जिसका अर्थ "क्रिया-कलाप की गति" (To Move) से है। **वुडवर्थ के अनुसार**—“अभिप्रेरणा व्यक्ति की वह दशा है जो उसे निश्चित व्यवहार करने के लिए निश्चित लक्ष्यों की ओर उत्तेजित करती है।” **ब्लेअर, जोन्स एवं सिम्पसन के अनुसार**—“अभिप्रेरणा एक प्रक्रिया है जिसमें सीखने वाले की आन्तरिक शक्तियाँ या आवश्यकताएँ उसको वातावरण में विभिन्न लक्ष्यों की ओर निर्देशित होती है।” **गुड के अनुसार**—“प्रेरणा कार्य को आरंभ करने, जारी रखने और नियमित करने की प्रक्रिया है।” **मैकडोनल्ड के अनुसार**—“व्यक्ति के अन्दर होने वाला ऊर्जा परिवर्तन ही अभिप्रेरणा है।” **बेरोन, बर्न व अन्य के अनुसार**—“अभिप्रेरणा एक काल्पनिक आन्तरिक प्रक्रिया है जो व्यवहार करने के लिए शक्ति प्रदान करती है और एक विशिष्ट व्यवहार की ओर व्यक्ति को ले जाती है।” **स्किनर के अनुसार**—“अभिप्रेरणा अधिगम का सर्वोत्कृष्ट राजमार्ग है।” **एटकिंसन के अनुसार**—“अभिप्रेरणा एक अथवा अधिक प्रभावों को उत्पन्न करने के लिए व्यक्ति में कार्य करने की प्रवृत्ति को जागृत करती है।” **जैम्स ड्रैवर के अनुसार**—“अभिप्रेरणा एक भावात्मक-क्रियात्मक कारक है जो चेतन अथवा अचेतन लक्ष्य की ओर होने वाले व्यक्ति के व्यवहार की दिशा को निश्चित करने का कार्य करता है।” इस प्रकार अभिप्रेरणा एक आन्तरिक कारक अथवा स्थिति है जो किसी क्रिया या व्यवहार को प्रारम्भ करने की प्रवृत्ति जागृत करती है। अभिप्रेरणा/प्रेरणा व्यवहार की दिशा निश्चित करती है और अधिगम की सफलता अभिप्रेरणा पर ही निर्भर है।

### अभिप्रेरणा/अभिप्रेरित व्यवहार की विशेषताएँ:-

1. अभिप्रेरणा व्यक्ति की एक आन्तरिक अवस्था को कहा जाता है, यह आन्तरिक अवस्था काल्पनिक होती है अतः इसे व्यक्ति के शरीर के भीतर ठोस रूप से नहीं देखा जा सकता।
2. अभिप्रेरणा में जो आन्तरिक अवस्था होती है उससे व्यक्ति में कुछ क्रियाएँ उत्पन्न होती हैं।
3. अभिप्रेरणा में उत्पन्न क्रियाओं से व्यक्ति एक निश्चित दिशा में यानि उद्देश्य प्राप्ति की ओर बढ़ता है। इसका मतलब यह हुआ कि प्रत्येक अभिप्रेरणा में एक निश्चित लक्ष्य होता है जिसकी ओर व्यक्ति का व्यवहार प्रेरित होता है।
4. अभिप्रेरित व्यवहार उत्पन्न होने के बाद उद्देश्य प्राप्ति तक जारी रहता है।
5. अभिप्रेरणा में उत्तेजनशीलता व क्रियाशीलता पाई जाती है।
6. किसी व्यवहार को अभिप्रेरित व्यवहार कहलाने के लिए यह आवश्यक है कि वह चयनात्मक हो।
7. अभिप्रेरित व्यवहार से संतुलन एवं समायोजन की प्राप्ति होती है।
8. अभिप्रेरित व्यवहार के पीछे कोई न कोई अभिप्रेरक अवश्य होता है।
9. अभिप्रेरणा को अधिगम की प्राणवायु एवं अधिगम का स्वर्णपथ भी कहा जाता है, क्योंकि अभिप्रेरणा अधिगम हेतु आवश्यक स्थिति है।



### अभिप्रेरणात्मक चक्र/अभिप्रेरणा के तत्व:-

अवश्यकता, प्रणोद/अन्तर्नोद तथा प्रोत्साहन/लक्ष्य अभिप्रेरणात्मक चक्र के प्रमुख सोपान तीन हैं। इन्हीं को अभिप्रेरणा के तत्व भी माना जाता है।

(1) **अवश्यकता**— मनोवैज्ञानिक 'अवश्यकता' को अभिप्रेरणात्मक चक्र का प्रथम सोपान मानते हैं। क्योंकि किसी भी अभिप्रेरणा की उत्पत्ति में सबसे पहले आवश्यकता ही उत्पन्न होती है। किसी चीज की कमी या अधियकता का होना ही आवश्यकता है। जैसे—प्यास की अवस्था में व्यक्ति की कोशिकाओं में पानी की कमी हो जाती है, जबकि मूत्र त्याग की आवश्यकता तब उत्पन्न होती है जब शरीर में कुछ पदार्थों की अधिकता हो जाती है। वुडवर्थ तथा स्कलॉसबर्ग के अनुसार—“कमी या अति की शारीरिक अवस्था को आवश्यकता कहा जाता है।”

(2) **अन्तर्नोद/प्रणोद/चालक**— आवश्यकता अन्तर्नोद को जन्म देती है। जब प्राणी में आवश्यकता उत्पन्न होती है तो इससे उसमें क्रियाशीलता बढ़ जाती है और वह पहले से अधिक सक्रिय तथा तनावपूर्ण लगता है। अतः किसी आवश्यकता के कारण जो तनाव या उद्वेलन उत्पन्न होता है वहीं अन्तर्नोद है।

(3) **प्रोत्साहन या लक्ष्य**— अभिप्रेरणात्मक चक्र का तीसरा प्रोत्साहन या लक्ष्य होता है। प्रोत्साहन या लक्ष्य वातावरण में उपस्थित वह वस्तु है जो प्राणी को अपनी ओर आकर्षित करती है तथा जिसकी प्राप्ति से प्राणी की आवश्यकता की पूर्ति होती है तथा प्रणोद में कमी हो जाती है।

### अभिप्रेरकों के प्रकार—

1. **जैविक/जन्मजात/शारीरिक अभिप्रेरक**— यह अभिप्रेरक प्राणी में जन्म से ही मौजूद होते हैं। यह अभिप्रेरक व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं से जुड़े होते हैं। इन अभिप्रेरकों के अभाव में प्राणी का जीवित रहना संभव नहीं है। ये अभिप्रेरक शरीर के अंदर एक संतुलित शारीरिक अवस्था बनाकर रखते हैं जिसे समस्थिति कहते हैं। मुख्य जन्मजात अभिप्रेरक निम्नलिखित हैं— भूख, प्यास, काम, नींद, तापक्रम नियमन, मलमूत्र त्याग, दर्द परिहार, श्वसन।
2. **अर्जित अभिप्रेरक/मनोसामाजिक अभिप्रेरक**— इन अभिप्रेरकों का अस्तित्व जन्म से नहीं होता अपितु इन्हें सीखा या उपार्जित किया जाता है। इनका जन्म मनुष्य की सामाजिक-मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होता है। इन अभिप्रेरकों को अर्जित करने में सामाजिक समूहों जैसे— परिवार, पड़ोस, मित्रगण और संबंधियों का योगदान होता है। अर्जित अभिप्रेरकों को दो भागों में बांटा गया है।
3. **व्यक्तिगत अर्जित अभिप्रेरक**— जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्ति अपने अनुसार जिन अभिप्रेरकों को अर्जित करता है, उन्हें व्यक्तिगत अर्जित अभिप्रेरक कहा जाता है। प्रमुख व्यक्तिगत अर्जित अभिप्रेरक निम्न हैं— आकांक्षा स्तर, जीवन लक्ष्य, मद-व्यसन, रुचि, आदता, अचेतन प्रेरणा।
4. **सामाजिक अर्जित अभिप्रेरक**— मुख्य सामाजिक अर्जित अभिप्रेरक अग्रलिखित हैं— सामुदायिकता, उपलब्धि की आवश्यकता, संबंधन की आवश्यकता, सत्ता एवं स्तर की आवश्यकता, आक्रमणशीलता की आवश्यकता, अनुमोदन की आवश्यकता, संग्रह प्रवृत्ति।

### अभिप्रेरणा के सिद्धान्त—अभिप्रेरणा के मुख्य सिद्धान्त निम्नलिखित हैं—

1. **मूलप्रवृत्ति सिद्धान्त**— मूलप्रवृत्ति से तात्पर्य प्राणी को उत्तेजित किए जाने पर एक खास ढंग से अनुक्रिया करने की जन्मजात प्रवृत्ति से होता है। सर्वप्रथम विलियम जेम्स ने यह मत जाहिर किया था कि मनुष्य अपने व्यवहारों के नियंत्रण एवं निर्देशन में पशुओं की तुलना में मूलप्रवृत्तियों का अधिक सहारा लेता है। बाद में विलियम मैकडूगल ने इस सिद्धान्त को थोड़ा आगे बढ़ाया और उन्होंने मूल-प्रवृत्ति को एक ऐसी जन्मजात प्रवृत्ति के रूप में परिभाषित किया जिसमें तीन तत्व प्रधान होते हैं—सामान्य उत्तेजन पहलू, क्रिया पहलू, लक्ष्य निर्देशन पहलू। इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति जितने भी कार्य करने को अभिप्रेरित होता है उनके मूल में जन्मजात मूल प्रवृत्तियों कार्य करती हैं। विलियम मैकडूगल को मूलप्रवृत्ति का जनक माना जाता है।
2. **प्रणोद सिद्धान्त/दाब सिद्धान्त**— इस सिद्धान्त के अनुसार अभिप्रेरणा में प्राणी में एक विशेष अवस्था पायी जाती है जिसे प्रणोद कहते हैं। प्राणी में इस अवस्था की उत्पत्ति उसकी शारीरिक अवस्था से होती है। इस अवस्था के दौरान व्यक्ति काफी क्रियाशील हो जाता है और उसका व्यवहार उद्देश्यपूर्ण हो जाता है। इस तरह से प्रणोद व्यक्ति को एक खास लक्ष्य की ओर धकेलता है, इसलिए इस सिद्धान्त को दाब सिद्धान्त भी कहा जाता है। जब व्यक्ति को लक्ष्य की प्राप्ति हो जाती है तो प्रणोद की तीव्रता कम हो जाती है और तनाव की स्थिति समाप्त हो जाती है।
3. **प्रोत्साहन सिद्धान्त/प्रत्याशा सिद्धान्त/खिंचाव सिद्धान्त**— इस सिद्धान्त के अनुसार अभिप्रेरित व्यवहार की उत्पत्ति में व्यक्ति की अवस्था यानी प्रणोद उतना महत्वपूर्ण नहीं होता जितना की स्वयं लक्ष्य या प्रोत्साहन। व्यक्ति का व्यवहार इस



प्रत्याशा से निर्देशित होता है कि वह अमुक व्यवहार करके वांछित परिणाम को प्राप्त कर सकता है, इसलिए इसे प्रत्याशा सिद्धान्त भी कहा जाता है। यह माना जाता है कि प्रोत्साहन में कुछ ऐसे गुण या शक्तियाँ होती हैं जो व्यक्ति के व्यवहार को अपनी ओर खींच लेती हैं इस कारण इसको खिंचाव सिद्धान्त भी कहा जाता है।

4. **विरोधी-प्रक्रिया सिद्धान्त**—इस सिद्धान्त के प्रतिपादक सोलोमैन तथा कौरविट है। यह सिद्धान्त अभिप्रेरणा की व्याख्या सुखवादी नियमों के आधार पर करता है। इस सिद्धान्त के अनुसार सुख देने वाले लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति अभिप्रेरित रहता है तथा इससे व्यक्ति को अच्छी सांवांगिक अनुभूति होती है, जबकि ऐसे लक्ष्यों को जिससे व्यक्ति को अप्रसन्नता होती है, व्यक्ति दूर ही रहना चाहता है। इस सिद्धान्त का यह मानना है कि अधिकतर अभिप्रेरक उत्पन्न करने वाले उद्दीपक द्वारा दो विपरीत तथा विरोधी अवस्थाएँ उत्पन्न होती हैं—A. अवस्था B. अवस्था।
5. **आदर्श स्तर सिद्धान्त/उत्तेजना सिद्धान्त**— इस सिद्धान्त के प्रतिपादक फिस्क, माडी, बर्लिन, हेब एवं इनके समर्थक हैं। इनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के सामने क्रियाशीलता का एक निश्चित स्तर होता है जिसे आदर्श स्तर कहा जाता है और व्यक्ति का व्यवहार इस स्तर पर होता है तो उसे काफी प्रसन्नता होती है। यदि व्यक्ति का व्यवहार इस आदर्श स्तर से ऊपर या नीचे होता है तो उसे अपने व्यवहार से उतनी प्रसन्नता नहीं मिल पाती है। अतः यदि व्यक्ति का व्यवहार आदर्श स्तर से अधिक है तो वह उसे कम करके आदर्श स्तर पर लाने के लिए अभिप्रेरित रहता है, यदि उसका व्यवहार आदर्श स्तर से नीचे है तो वह उसे ऊँचा उठाकर आदर्श स्तर तक लाने के लिए अभिप्रेरित रहता है। इस सिद्धान्त को उत्तेजन सिद्धान्त भी कहा जाता है।
6. **आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धान्त**— यह सिद्धान्त अब्राहम मैस्लॉ द्वारा 1954 में प्रतिपादित किया गया। मैस्लॉ ने बताया कि मानव आवश्यकताओं या अभिप्रेरकों की व्याख्या एक अनुक्रम या सीढ़ी के रूप में की जा सकती है। मैस्लॉ ने मानव आवश्यकता के पांच प्रकार बतलाए हैं जो निम्न हैं— शरीर-क्रियात्मक आवश्यकता, सुरक्षा की आवश्यकता, आत्मीयता की आवश्यकता, सम्मान की आवश्यकता, आत्मसिद्धि की आवश्यकता।
7. **कार्य-प्रेरणा का द्वित्व सिद्धान्त/अभिप्रेरणा-स्वास्थ्य विचारधारा**— अभिप्रेरणा की इस विचारधारा का प्रतिपादन फ्रेडरिक हर्जबर्ग ने किया था। इसके अनुसार मानवीय आवश्यकताओं को दो समूहों में विभाजित किया जा सकता है जो परस्पर एक-दूसरे से संबंधित होने के साथ-साथ मानवीय व्यवहारों को अलग-अलग तरीके से प्रभावित करती हैं। आवश्यकता के प्रथम समूह को उन्होंने स्वास्थ्य घटकों की तथा दूसरे समूह को अभिप्रेरक घटकों की संज्ञा दी है। हर्जबर्ग ने स्वास्थ्य घटकों के अंदर व्यक्ति जिस संगठन या संस्था में काम करता है, वहाँ के वेतन-भत्तों, कंपनी की नीति एवं प्रशासन, अन्तर्व्यक्तिक संबंधों, पर्यवेक्षण की गुणवत्ता, कार्य सुरक्षा, कार्य की दशाओं तथा कार्य एवं जिंदगी के मध्य के संतुलन को शामिल किया। अगर ये घटक सकारात्मक रूप से व्यक्ति को मिलते हैं तो ये व्यक्ति या कर्मचारी के अभिप्रेरक घटकों को भी धनात्मक रूप से प्रभावित करेंगे और व्यक्ति को कार्य-संतुष्टि प्राप्त होगी। हर्जबर्ग ने अभिप्रेरक घटकों के अन्दर व्यक्तिगत उपलब्धि, प्रतिष्ठा, पहचान, कार्य का प्रकार, उत्तरदायित्व, प्रगति के अवसर, पदोन्नति एवं वृद्धि को शामिल किया है।
8. **वेक्टर-कर्षण शक्ति सिद्धान्त**— मानव अभिप्रेरणा के अध्ययन में कुर्ट लेविन का योगदान प्रमुख है। इनका वेक्टर-कर्षण शक्ति उपागम एक ऐसा उपागम है जिसमें मानव-व्यवहार विशेषकर अभिप्रेरित व्यवहार की एक वैज्ञानिक व्याख्या करने की कोशिश की गयी है। वेक्टर-कर्षण शक्ति उपागम में अभिप्रेरित व्यवहार की उत्पत्ति 'कर्षण-शक्ति' तथा वेक्टर पर आधारित है। कर्षण-शक्ति से तात्पर्य लक्ष्यवस्तु का व्यक्ति के लिए महत्व से है। कर्षण-शक्ति धनात्मक तथा ऋणात्मक कुछ भी हो सकती है। धनात्मक कर्षण शक्ति उत्पन्न करने वाली लक्ष्य वस्तु से व्यक्ति का तनाव कम होता है तथा ऋणात्मक कर्षण शक्ति उत्पन्न करने वाली लक्ष्य वस्तु से व्यक्ति का तनाव बढ़ता है। वेक्टर से तात्पर्य एक ऐसे नल से होता है जो व्यक्ति पर प्रभाव डालता है और उसे एक निश्चित दिशा में व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है। वेक्टर की दिशा तथा शक्ति लक्ष्य वस्तु की कर्षण शक्ति पर निर्भर करती है।
9. **लक्ष्य-निर्धारण सिद्धान्त**— अभिप्रेरणा के इस सिद्धान्त का प्रतिपादन लॉके एवं लॉथम के शोधों पर आधारित है। इस सिद्धान्त में अभिप्रेरणा में संज्ञानात्मक कारकों को महत्वपूर्ण बतलाया गया है न कि उत्तेजन या प्रणोद को। इस सिद्धान्त का केन्द्र बिन्दु यह है कि अभिप्रेरणा लक्ष्य के स्वरूप द्वारा प्रभावित होती है। लॉके एवं लॉथम के अनुसार—विभिन्न तरह के कार्यों में व्यक्ति का निष्पादन उस समय उत्तम होता है जब लक्ष्य विशिष्ट होते हैं। यदि लक्ष्य सामान्य है या उसमें विशिष्टता नहीं है तो व्यक्ति का निष्पादन कम हो जाता है क्योंकि ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति में अभिप्रेरणा का स्तर कम होता है।
10. **आचारशास्त्रीय सिद्धान्त**— आचारशास्त्र प्राणीशास्त्र की एक शाखा है जिसमें पशुओं के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। अभिप्रेरणा के आचारशास्त्रीय सिद्धान्त की बुनियाद मूलप्रवृत्ति सिद्धान्त है। आचारशास्त्रीय विचारधारा के अनुसार प्रजाति-विशिष्ट व्यवहार की दो अवस्थाएँ होती हैं—प्रणोद की अवस्था, निश्चित क्रिया पैटर्न की अवस्था।



11. **मनोविश्लेषणवादी सिद्धान्त**— प्रवर्तक—सिग्मंड फ्रॉयड, फ्रॉयड के अनुसार व्यक्ति का समस्त व्यवहार दो तरह की मूल प्रवृत्तियों का परिणाम होता है—पहली 'जीवन मूल प्रवृत्ति' जिसे फ्रॉयड ने इरोस नाम दिया। इसका संबंध रचनात्मक कार्यों से होता है। दूसरी 'मृत्यु मूल प्रवृत्ति' जिसे फ्रॉयड ने थेनाओस नाम दिया इसका संबंध विनाश से होता है।

12. **उपलब्धि अभिप्रेरणा के सिद्धान्त**—

(अ) **मैक्सीलैण्ड का उपलब्धि अभिप्रेरणा सिद्धान्त**— उपलब्धि की आवश्यकता या जिसे उपलब्धि भी कहा जाता है, से तात्पर्य एक ऐसे अभिप्रेरक से होता है जिससे प्रेरित होकर व्यक्ति अपने कार्य को इस ढंग से करता है कि उसे उसमें अधिक से अधिक सफलता मिल सके। मैक्सीलैण्ड ने बताया कि जिन व्यक्तियों में उपलब्धि अभिप्रेरक अधिक होता है वे अपनी जिन्दगी में अधिक से अधिक उच्च स्तर की सफलता प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। उपलब्धि अभिप्रेरक सभी व्यक्तियों में समान नहीं होता है किसी में यह अभिप्रेरक काफी अधिक होता है तो किसी में यह अभिप्रेरक कम होता है। उपलब्धि अभिप्रेरक को T.A.T. द्वारा मापा जा सकता है।

(ब) **एटकिन्सन का सिद्धान्त**— उपलब्धि अभिप्रेरणा के एक बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्धान्त का प्रतिपादन एटकिन्सन तथा बिक के द्वारा किया गया। इस सिद्धान्त का सारतत्व यह है कि सफलता प्राप्त करने की प्रवृत्ति दो अलग-अलग अभिप्रेरकों पर आधारित होती है—सफलता की ओर बढ़ने की प्रवृत्ति तथा असफलता से दूर हटने की प्रवृत्ति। ये दोनों प्रवृत्तियाँ उस समय सबसे अधिक होती हैं जब सफलता की संभावना 0.5 होती है अर्थात् 50 प्रतिशत होती है। सिद्धान्त की व्याख्या से स्पष्ट है कि इस सिद्धान्त के तीन मुख्य पहलू हैं—सफलता प्राप्त करने के अभिप्रेरक, असफलता से दूर रहने का अभिप्रेरक, उपलब्धि अभिप्रेरण।

(स) **गुणारोपण सिद्धान्त या वाईनर का उपलब्धि अभिप्रेरणा सिद्धान्त**— इस सिद्धान्त का प्रतिपादन वाईनर ने किया। इस सिद्धान्त की मान्यता है कि लोग अपने व्यवहार को समझने या उसकी व्याख्या करने के लिए प्रेरित होते हैं। वे ऐसा अंशतः विभिन्न कारकों के रूप में गुणारोपण करके करते हैं। जैसे किसी कार्य में सफलता मिलने पर व्यक्ति इसका मुख्य कारण अपनी योग्यता तथा क्षमता समझता है। वाईनर का मत है कि जिन कारकों के रूप में व्यक्ति अपने उपलब्धि व्यवहार का गुणारोपण करता है उनके दो मुख्य आयाम या विमा होते हैं जो इस प्रकार हैं—(1) पहला आयाम का संबंध संभावित कारण के स्रोत से होता है जो बाह्य या आंतरिक हो सकता है। आंतरिक स्रोत में व्यक्ति सामान्यतः अपनी योग्यता, क्षमता या प्रयास को रखता है तथा बाह्य कारक में व्यक्ति कार्य की कठिनाई तथा भाग्य आदि को रखता है। (2) दूसरे आयाम का संबंध कारण की स्थिरता से है। दूसरे शब्दों में, इस आयाम का संबंध उन कारकों के सापेक्ष स्थायित्व से है जिनसे परिणाम प्रभावित होता है। उदाहरण स्वरूप आंतरिक क्षमता तथा कार्य की कठिनाई स्थायी कारण हैं जो व्यक्ति के साथ सतत बने होते हैं।

### अधिगम में अभिप्रेरणा की भूमिका:—

अधिगम हेतु अभिप्रेरणा अधिगमकर्ता को तत्परता प्रदान करती है। बालक को सीखने के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित करती है। विद्यार्थियों को अभिप्रेरणा की सहायता से सक्रिय रखा जा सकता है क्योंकि सक्रिय भागीदारी विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करती है। अभिप्रेरणा रुचि उत्पन्न करने तथा उसे बनाये रखने में सहायक है। अधिगम कार्य को जितना अधिक आकर्षक व रोचक बनाया जाएगा उतना ही विद्यार्थी अभिप्रेरित होगा। अधिगम में अवधान केंद्रीकरण हेतु अभिप्रेरणा अत्यंत आवश्यक है। शिक्षण—अधिगम प्रक्रिया में अवधान हेतु रुचि व अभिप्रेरणा सहायक सिद्ध होती है। लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की निश्चितता तथा स्पष्टता द्वारा व्यक्ति उचित अधिगम करता है। अध्यापक अपवनी अनुदेशन सामग्री के चयन और आयोजन में रुचि दिखाते हैं और इसके द्वारा विद्यार्थी अभिप्रेरित होते हैं। उचित विधियों का चयन एवं सहायक सामग्री व आधुनिक तकनीकों के माध्यम से छात्र अभिप्रेरित होकर उचित अधिगम करते हैं। सकारात्मक व उपयुक्त वातावरण के निर्माण हेतु अभिप्रेरणा महत्वपूर्ण है क्योंकि नकारात्मक परिस्थितियों में अधिगम जटिल हो जाता है।

### संदर्भ सूची:—

1. Baron, R.A. & Mistra, G (2015) Psychology, New Delhi: Pearson Education India.
2. Singh Arun Kumar (2017), Adhunik Samanaya Manovigyan, New Delhi: Moti Lal Banarasi Das.
3. Cicarelli, S.K. White, J.N. & Misra, G (2017), Psychology, New Delhi: Pearson Education India.
4. Gerrig, RJ Zimbardo, PG, Suartal, F, Brennen, T.Donalsen, R & Archer, T. (2013), Psychology & Life, New Delhi : Pearson Education India.



5. Baron, R.A. Branscombe, N.R. Byrne, D. & Bhardwaj. G (2012) Fundamentals of Social Psychology, Noida: Dorling Kindersely South Asia.
6. Morgen King, Infroduction to Psychology : TMH
7. Dr. Prabha Sharma, Prakash naryan Natani (2007), Educational Technology and class Room Management : Maya Prakashan Jaipur.
8. Myers D.G. (1994), Exploring Social Psychology New York; MC graw Hill.
9. Singh Arun Kumar: Siksha Manovigyan : Moti Lal Banarasi Das, Delhi.
10. Singh Arun Kumar: Manovigyan Mein Mapan Avam Mulayankan, New Delhi: Moti Lal Banarasi Das.
11. Aggarwal J.C. (2016) Educational Technology. Information and Communication Technology: Shri Vinod Pustak Mandir, Agra.
12. Uma Mangal, S.K. Mangal (2014) : Educational Technology, PHI, Learning Delhi.
13. Sharma Shiveharan, Swami Vishnu (2007): Educational Technology & Teching Methodology : Saraswati Prakashan Alwar.
14. Chadda, N.K. (2009) Applied Psychometry : New Delhi: Sage
15. Anastasi, A, (1997) Psychological Testing, New York: Mac Millan Co.
16. Garrett, H (1981) Statistic in Psychology and Education Mumbai : Vakil Febber and Simcons.